केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

शैक्षणिक इकाई,

हिंदी गतिविधि के संबंध में एक संक्षिप्त रिपोर्ट

राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं कार्यान्वयन के संबंध में अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, शैक्षणिक इकाई, दिल्ली में हिंदी साहित्यकारों की रचनाओं का पाठ एवं उनकी रचनाओं पर चर्चा करने के लिए दिनांक 11.02.2025 को अपराह्न 3.00 बजे हिंदी गतिविधि का आयोजन निम्नानुसार किया गया:-

स्थान: सम्मेलन कक्ष प्रथम तल, के.मा.शि.बो., शैक्षणिक इकाई।

हिंदी गतिविधि: हिंदी छायावादी काव्यधारा के सुदृढ़ स्तम्भ श्री जय शंकर प्रसाद एवं श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविताओं का पाठ एवं उनकी कविताओं पर विचार विमर्श।

श्रीमती प्राची दीक्षित, संयुक्त सचिव (शैक्षणिक) ने डॉ. प्रज्ञा एम. सिँह निदेशक, शैक्षणिक इकाई के मौखिक अनुमोदन से गतिवधि का शुभारंभ किया और उन्होंने सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस गतिविधि में श्रीमती श्वेता सिंह, संयुक्त सचिव, श्री एल. हिलाल अहमद संयुक्त सचिव, श्री अंजलि छाबड़ा, संयुक्त सचिव एवं श्रीमती प्रज्ञा वर्मा, उप सचिव सहित लगभग 30 अधिकारी एवं कर्मचारी सम्मिलित हुए। इसके उपरांत, श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने इस गतिविधि की रूपरेखा के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

श्रीमती नेहा शुक्ला, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्राप्त की गई श्री जय शंकर प्रसाद की साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में बताया। उनका जीवन परिचय प्रस्तुत किया और उनकी काव्य शैली की विशेषताओं के बारे में व्याख्यात्मक रूप से अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि कोई व्यक्ति विशेष अपनी भाषा में हिंदी शब्दकोश संबंधी ज्ञान वर्धन करना चाहता है तो उसे श्री जय शंकर प्रसाद की कृतियों को अवश्य पढ़ना चाहिए साथ ही उन्होंने श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के बारे संक्षिप्त विवरण देते हुए उनकी कविता 'जूही की कली' पाठ किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

विजन-वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी–स्नेह-स्वप्न-भग्न–
अमल-कोमल-तनु तरुणी–जुही की कली,
दृग बंद किए, शिथिल–पत्रांक में,
वासंती निशा थी;.....
आई याद बिछुड़न से मिलन की वह मधुर बात,
आई याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,
आई याद कांता की कंपित कमनीय गात,
फिर क्या? पवन.....

उन्होंने कहा कि उक्त कविता में जूही की कली और पवन के छेड़-छाड़ से भरे चंचल प्रेम को कवि ने बहुत ही सौंदर्यपूर्ण ढंग से उद्धृत किया गया है। इसके उपरांत, श्रीमती आँचल जैन, निजी सहायक ने श्री जय शंकर प्रसाद की 'सब जीवन बीता जाता है' कविता का वाचन किया जिसका एक भाग इस प्रकार है:-

सब जीवन बीता जाता है
धूप छाँह के खेल सदृश
सब जीवन बीता जाता है.....

आप कहाँ छिप जाता है
सब जीवन बीता जाता है।

इस कविता में कवि ने जीवन के उत्थान-पतन की चर्चा की है। इसके बाद श्री अभिनव सिंह सहायक सचिव ने अपनी स्वरचित कविता सुनाई और अपने जीवन के व्यक्तिगत अनुभव को साझा करते हुए 'मेघ और पर्वत' कविता के कुछ अंश पढ़े। श्रीमती हिमशिखा, अधीक्षक ने सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'मौन' का वाचन किया। श्रीमती देविका कुँवर, निजी सचिव ने सच की महत्ता पर आधारित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की 'यह सच है' कविता का पाठ किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

यह सच है :–
तुमने जो दिया दान दान वह,
हिंदी के हित का अभिमान वह,
जनता का जन-ताका ज्ञान वह,
सच्चा कल्याण वह अथच है–
यह सच है!

रोहताश, कनिष्ठ सहायक ने जय शंकर प्रसाद की 'आँखों से अलख जगाने को' नामक कविता का पाठ किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

आँखों से अलख जगाने को,
यह आज भैरवी आई है।
उषा-सी आँखों में कितनी,
मादकता भरी ललाई है।.....
लहरों में यह क्रीड़ा-चंचल,
सागर का उद्वेलित अंचल
है पोंछ रहा आँखें छलछल,
किसने यह चोट लगाई है?

श्री अरविंद कुमार, अनुभाग अधिकारी ने सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'तोड़ती पत्थर' के माध्यम से भीषण तपती धूप में पत्थर तोड़ने वाली एक महिला की व्यथा व्यक्त की, जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।.....
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढ़ुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा-
"मैं तोड़ती पत्थर।

इसके अतिरिक्त, सुश्री अंजलि छाबड़ा, संयुक्त सचिव ने श्री जय शंकर प्रसाद की कविता 'हृदय का सौंदर्य' नामक कविता पाठ किया जिसके कुछ अंश इस प्रकार है:-

नदी का विस्तृत वेला शांत,
अरुण मंडल का स्वर्ण विलास;
एक से एक मनोहर दृश्य,

प्रकृति की क्रीड़ा के सब छंद;.....
उठे मधु लहरी मानस में,
कूल पर मलयज का हो वास।

साथ ही श्रीमती प्राची दीक्षित, संयुक्त सचिव (शैक्षणिक) ने भी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'मौन' पढ़ी जो कि इस प्रकार है:-

बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक-से.....
मौन मधु हो जाए
भाषा मूकता की आड़ में,.....
सरल अति स्वच्छंद
जीवन, प्रात के लघुपात से,
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वंद।

उक्त कविता के अर्थ 'मौन' को श्रीमती प्राची दीक्षित, संयुक्त सचिव (शैक्षणिक) ने कार्यालय परिसर के कार्य प्रणाली में परिलक्षित करके उसकी सार्थकता को सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने यह बताया कि मौन की उपयोगिता व्यक्ति विशेष के मानसिक एवं सामाजिक संतुलन के लिए अति आवश्यक है। इसके साथ ही श्री एल. हिलाल अहमद, संयुक्त सचिव ने भी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के जीवन एवं उनकी काव्य रचना के बारे में चर्चा की। उन्होंने उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना 'राम की शक्ति पूजा' और 'सरोज स्मृति' के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए।

उक्त कविताओं के पाठ के बाद निदेशक महोदया ने महान हिंदी साहित्यकारों के संबंध में आयोजित की गई इस गतिविधि की सराहना की। इस गतिवधि में शैक्षणिक इकाई के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रकार हिंदी गतिविधि सम्पन्न हुई।

झलकियाँ

Pramod Kumar T.K
Joint Secretary, Academics CBSE
15th July, 1975 TO 25th May 2023
“An Extraordinary intelligent and Committed officer, known for his cherubic Smile, Down-to-earth, Helping demeanor, Passion for work !”
Your Life A Model For All !
You Will Always Be In Our Memories !!

PUSH

PUSH

PUSH